☆☆☆☆ जीतेजी मरने का यादगार – श्राद्ध ☆☆☆☆

पितृ पक्ष अथवा श्राद्ध – आदर, सम्मान का प्रतीक,
पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, निष्ठा की ऋण अदायगी – यथार्थ एवं सटीक।
उनके स्नेह, सेवा और पालना का करना स्मरण,
जिनकी खुशबू आज भी करते अनुभव जैसे इत्र या चंदन।

यह अवसर है उनकी कुर्बानियों और आशीषों को देना श्रद्धांजलि,
उनकी अनुपम शिक्षाओं द्वारा अवगुणों को देना तिलांजलि।
उनकी खुशहाली और सुखमय जीवन यही है इसका उद्देश्य,
अब भी उनका जीवन हो विश्व कल्याण हेतु विशेष।

जीवन और मृत्यु है एक स्वभाविक प्रक्रिया,
आत्मा का देह धारण कर पुनर्जन्म लेने की क्रिया।
सकारात्मक रूप से इस पर करें आत्म मंथन,

इन रीति-रस्मों से उपर उठकर बनाएँ महान जीवन।

वर्तमान समय दुखों और प्राकृतिक आपदाओं से परिपूर्ण,
सर्वव्यापी विकारों के कारण, कभी भी संभव यहाँ से आरोहण।
यह समय है आत्म अभिमानी बन परमपिता का करना सिमरण,
इस पुरानी दुनिया से रहकर निर्लिप्त, स्वर्णिम युग का करना आह्वान।

हम ही हैं पूज्य और पूर्वज, यही है शिव पिता का संदेश,
जीतेजी मरकर इस दुनिया से, अब लौटना है स्वदेश।
84 जन्मों का चक्र पूरा कर, अब चलना है घर शांतिधाम,
करना अब इस दुनिया से बेहद श्राद्ध, बनाना इसे सुखधाम।